एंडी और शेर

जेम्स डी., हिंदी : विदूषक

एंडी और शेर

विलियम, हिंदी : विदूषक

एंडी और शेर

दयालुता की कहानी

उस दिन सूरज काफी तेज़ था और हवा सिर्फ इतनी तेज़ थी जिससे झंडा फड़फड़ा सके. एंडी लाइब्रेरी की तरफ चला....

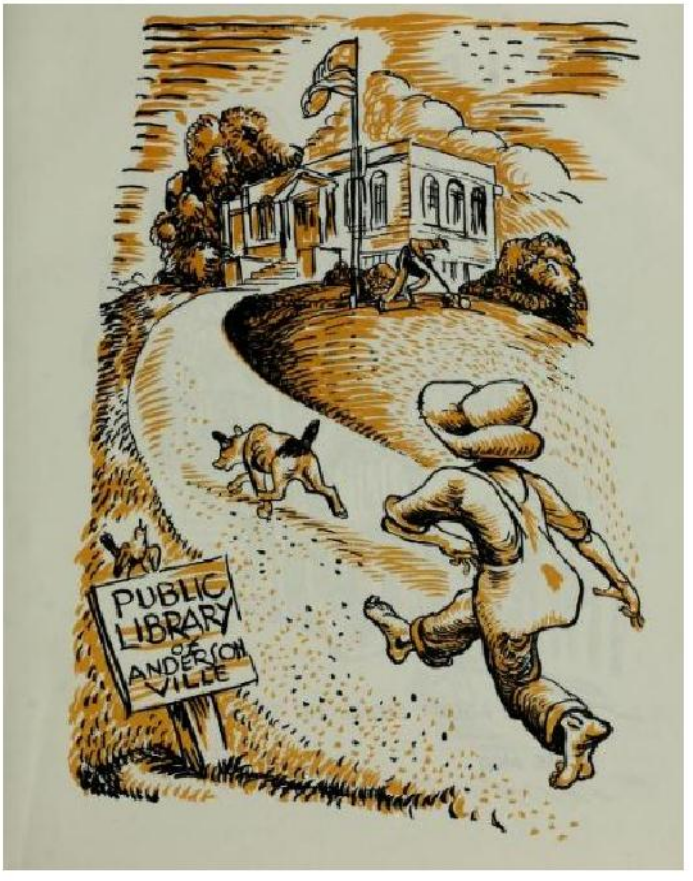

....वो शेरों के बारे में एक किताब पढ़ना चाहता था. वो उस किताब को घर लाया.

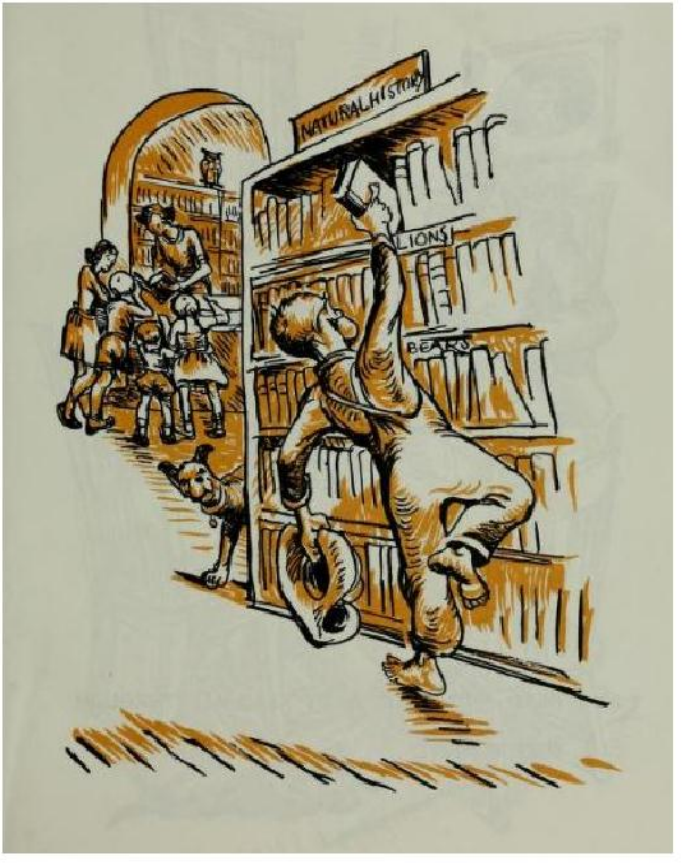

उसने उस पुस्तक को पढ़ना शुरू किया. वो दोपहर के खाने के समय तक उसे पढ़ता रहा.

उसने शाम तक वो किताब पढ़ी और फिर सोने से पहले तक.

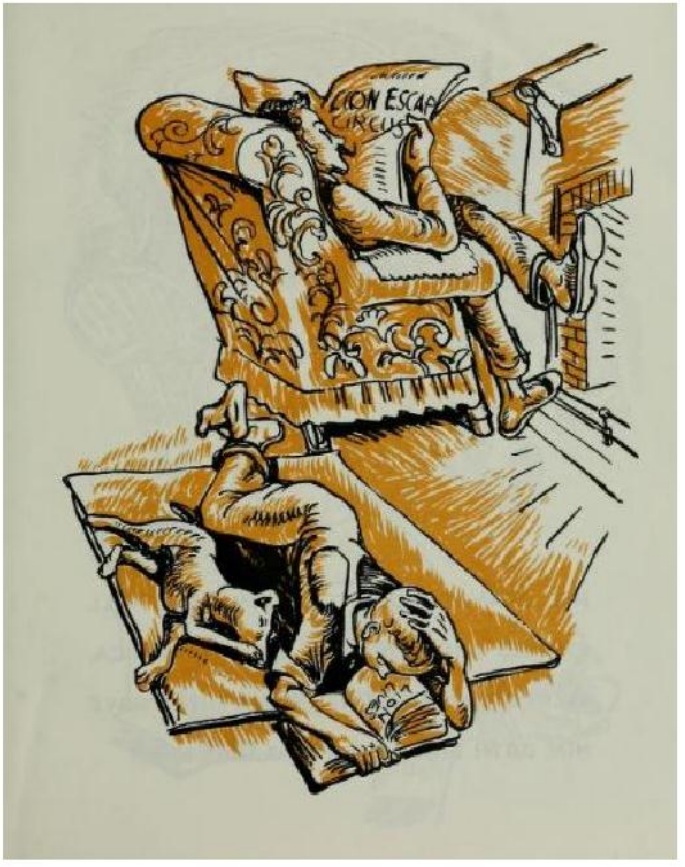

दादाजी ने उसे अफ्रीका में शेरों के शिकार के बारे में कुछ कहानियां सुनाईं. सब कहानियों का अंत इस लाइन से होता - “फिर मैंने उसे रात में बन्दूक मारी.”

उस रात एंडी सपने में अफ्रीका में शेरों का शिकार करता रहा. अंत में जब सुबह हुई तो....

....फिर एंडी की आँख खुली. तब तक खिड़की से सूरज की किरणें कमरे में अन्दर आ चुकी थीं और उसका कुत्ता प्रिंस पलंग की चादर को खींच रहा था. तब तक सब शेर जा चुके थे पर एंडी उनके ही बारे में सोचता रहा.

पिछवाड़े में भी एंडी शेरों के बारे में सोच रहा था. पिताजी ने एंडी को मुंह धोने की याद दिलाई.

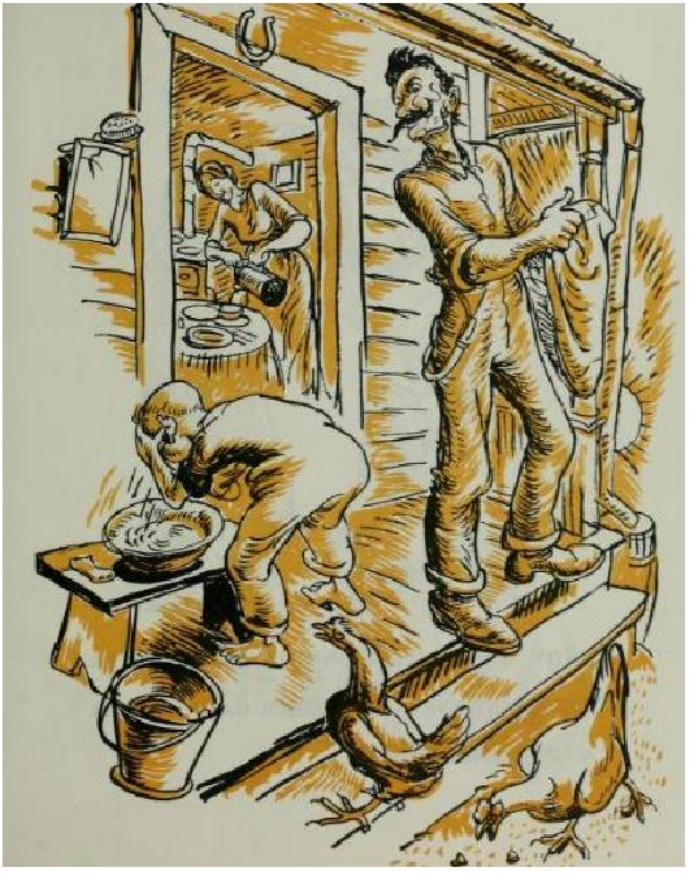

नाश्ते के बाद भी एंडी शेरों के बारे में ही सोच रहा था. अंत में माँ ने कंघे से उसके बाल संवारे.

फिर एंडी स्कूल की तरफ बढ़ा.

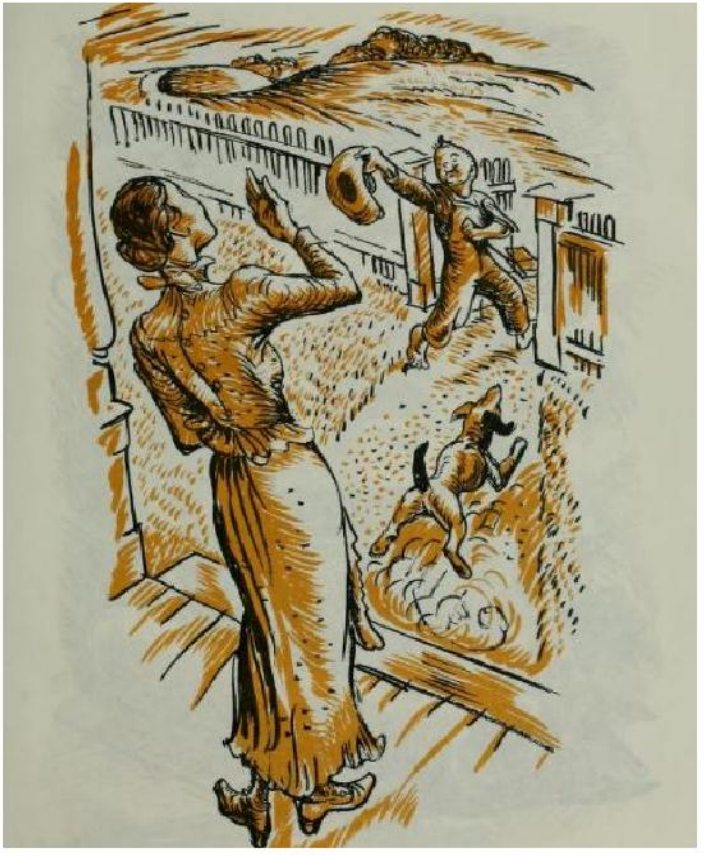

PART
2
भाग 2

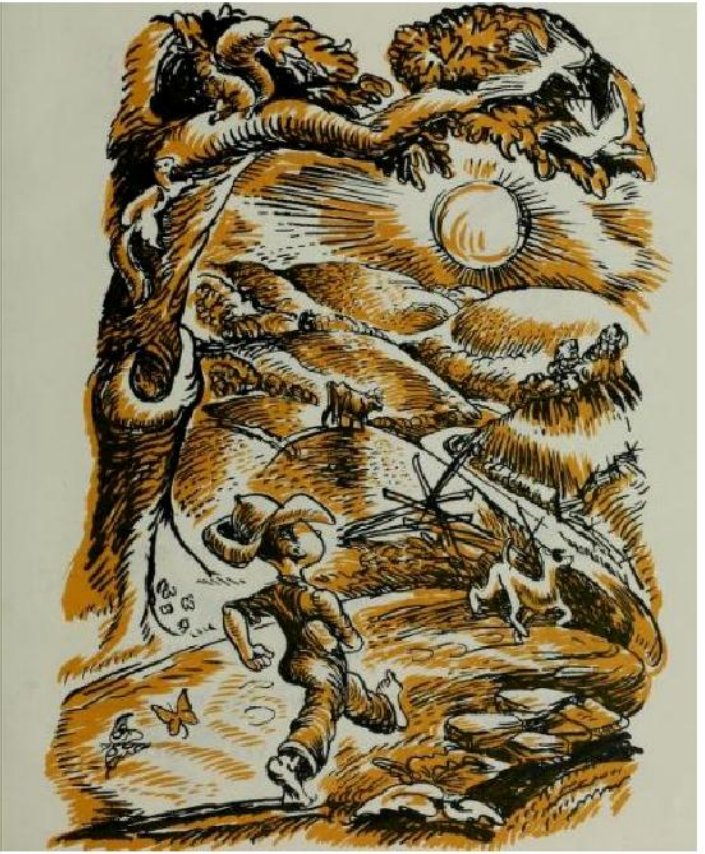

एंडी चलते-चलते अपने बस्ते को हिला रहा था और मुंह से सीटी बजा रहा था. जब वो सड़क एक मोड़ पर पहुंचा तो उसे बड़े पत्थर के पीछे कोई चीज़ नज़र आई. वो चीज़ उसे कुछ अजीब सी लगी.

इसलिए प्रिंस और एंडी बहुत धीरे-धीरे उसका मुआईना करने आगे बढ़े.

वो चीज़ हिल रही थी!

वो एक शेर था! उस क्षण....

...एंडी ने वहां से दफा होने की सोची.

शेर ने भी वही सोचा. फिर वो दोनों
उस बड़े पत्थर के चक्कर काटते रहे.

जिस ओर एंडी दौड़ता, उसे वही शेर नज़र आता.

जिस ओर शेर दौड़ता, उसे एंडी नज़र आता.

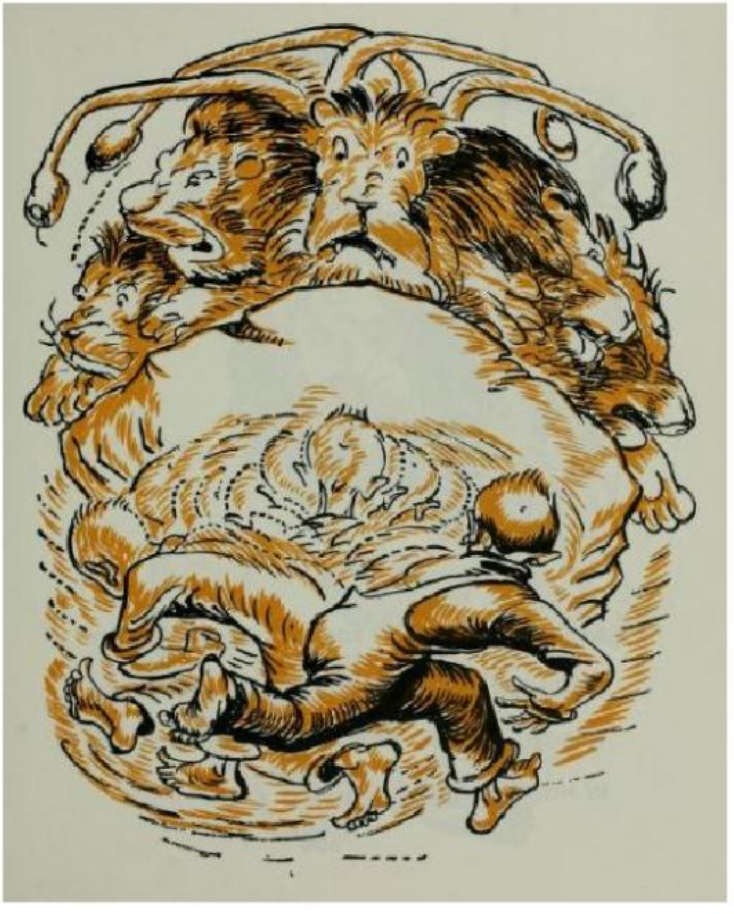

कुछ समय बाद दोनों साँस लेने के लिए रुके. शेर ने अपना पंजा आगे बढ़ाया जिससे एंडी उसे करीबी से देख सके. शेर के पंजे में एक बहुत बड़ा काँटा चुभा था.

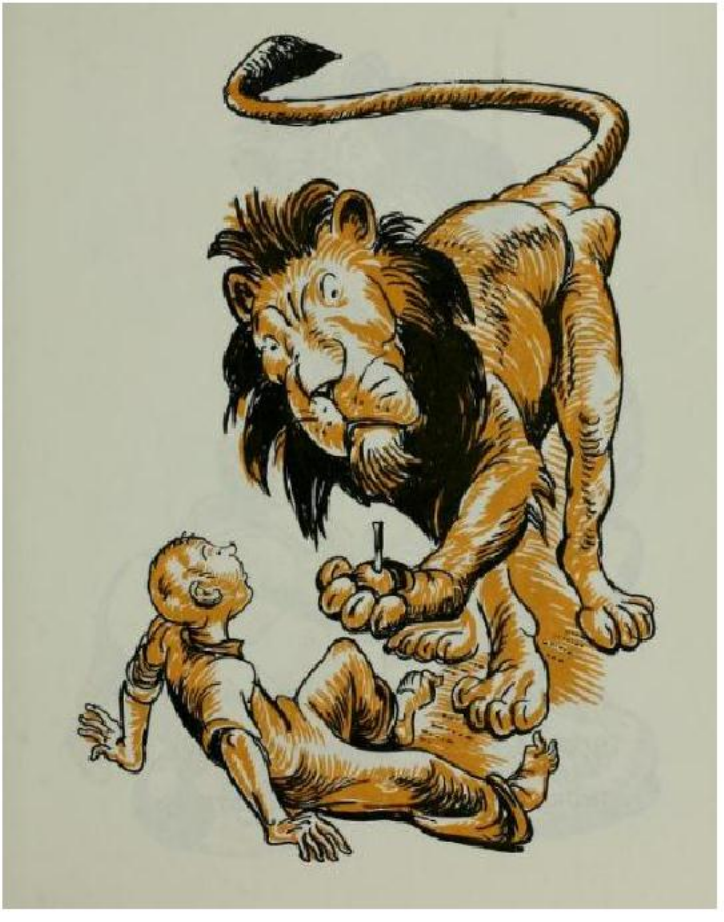

एंडी के दिमाग में एक आईडिया आया. उसने शेर से सब्र करने को कहा. उसने शेर को बताया कि कुछ मिनटों में वो कांटे को निकाल देगा.

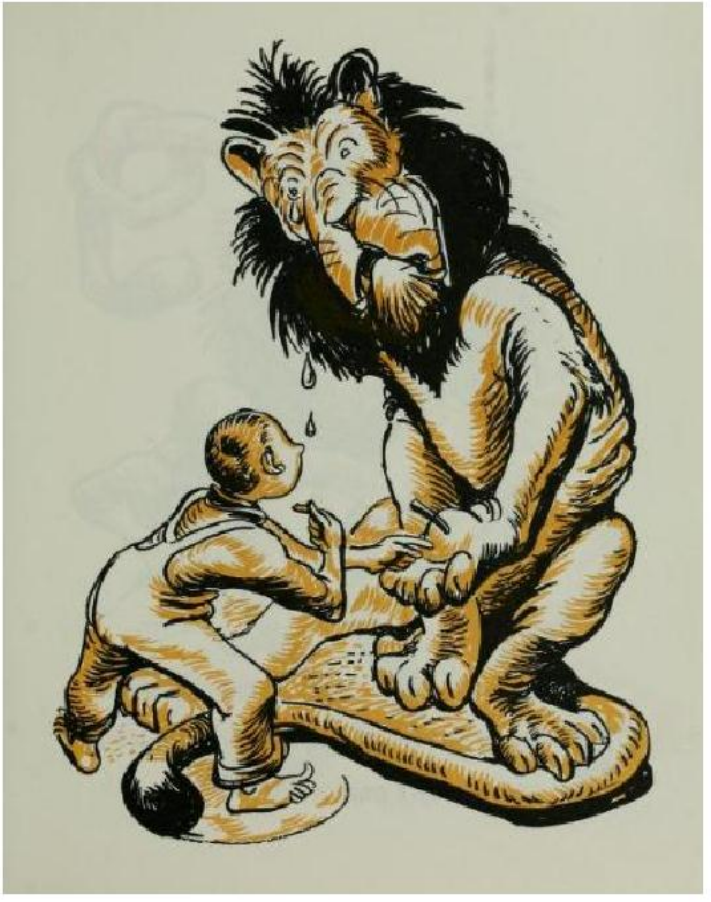

भाग्यवश, एंडी अपनी जेब में हमेशा अपना टूल-बॉक्स रखता था. उसने झट से अपना प्लास निकाला.

फिर एंडी ने अपने एक पैर से शेर के पंजे को दबाया और फिर अपनी पूरी ताकत से कांटे को खींचा.

अंत में कांटा बाहर निकल आया.

एहसानमंद शेर ने अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करने के लिए जीभ से एंडी के चेहरे को चाटा.

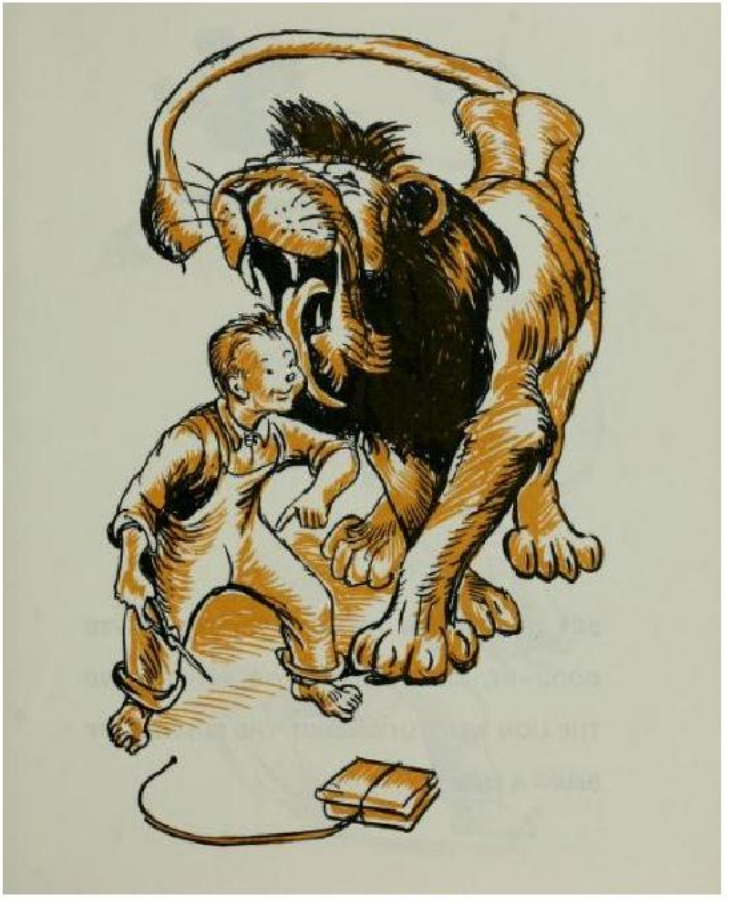

फिर विदाई का समय आया. इसलिए दोनों ने एक-दूसरे से अलविदा कहा. फिर एंडी ने अपने स्कूल की तरफ रुख किया और शेर अपने रास्ते गया.

भाग 3

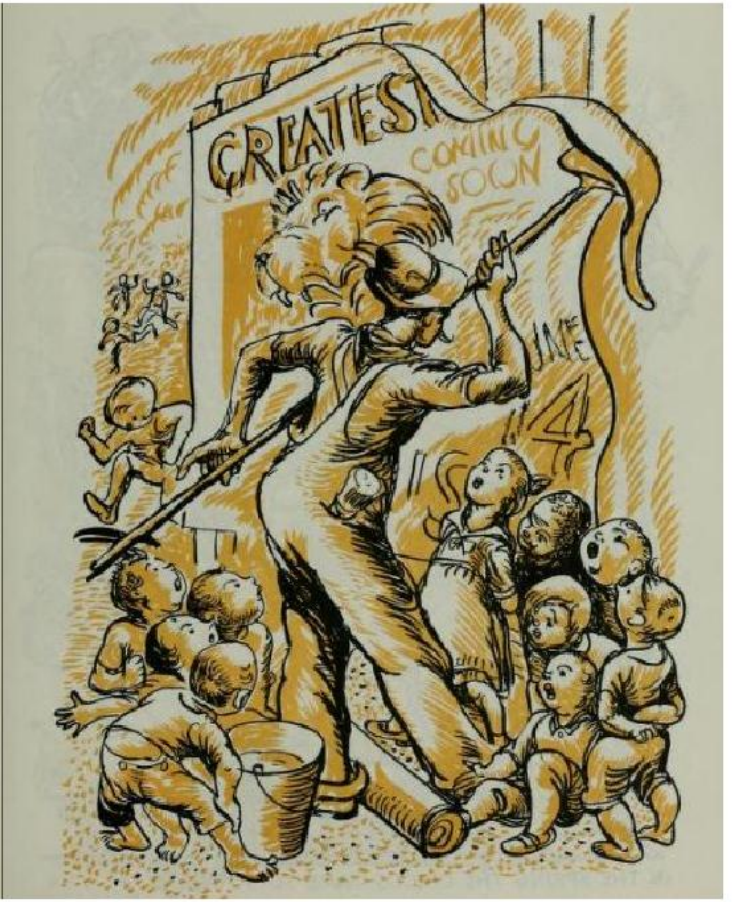

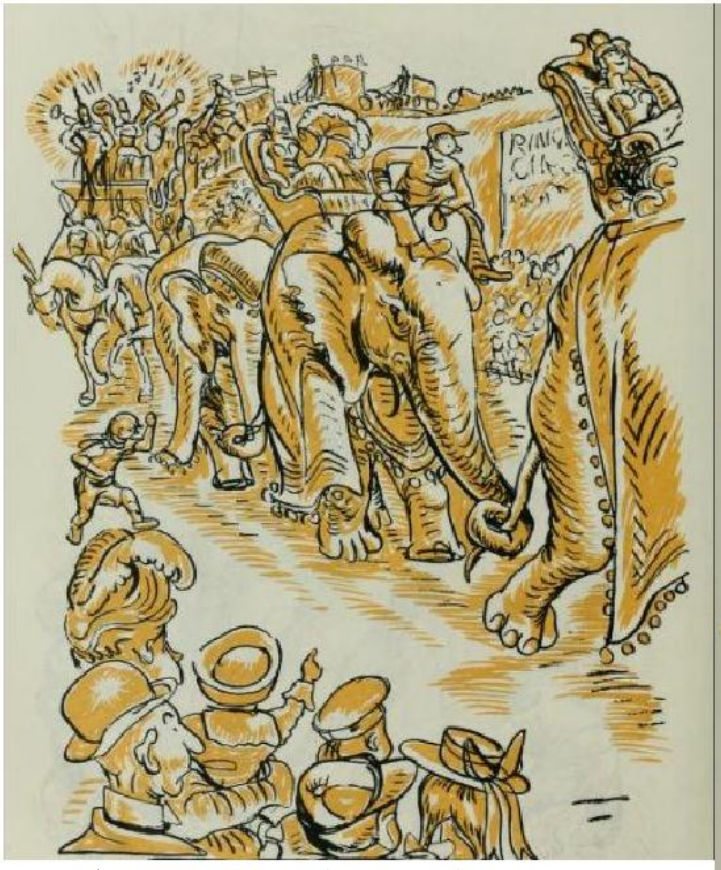

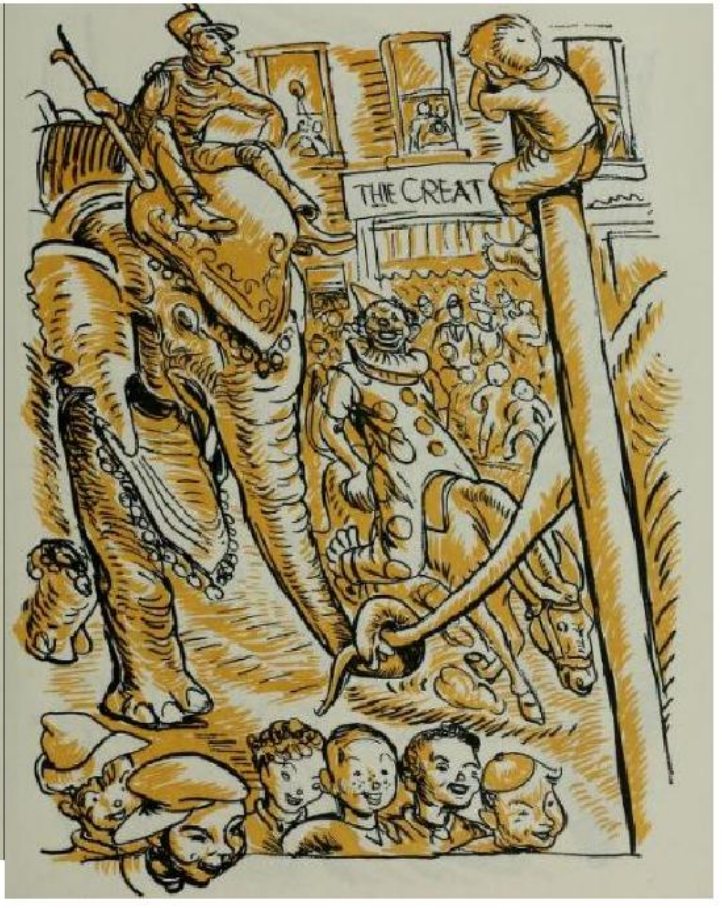

वसंत के मौसम में शहर में सर्कस आया.

एंडी भी सर्कस देखने गया. वो सर्कस में शेर का मशहूर करतब देखना चाहता था.

अपना मशहूर करतब दिखाते हुए शेर अपने पिंजड़े से बाहर कूदा! फिर शेर दहाड़ता हुआ लोगों की तरफ दौड़ा. सब लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागे.

एंडी भी भाग रहा था. तभी उसने शेर को
तेज़ी से अपनी ओर लपकते हुए देखा.
पर फिर आखरी क्षण....

...वो तो एंडी का दोस्त शेर था !!

दोनों ने एक–दूसरे को पहचान लिया.

फिर दोनों ख़ुशी से मिलकर नाचने लगे.
इतनी देर में वहां भीड़ वापिस आई.
वे लोग शेर को दुबारा पकड़ना चाहते थे.

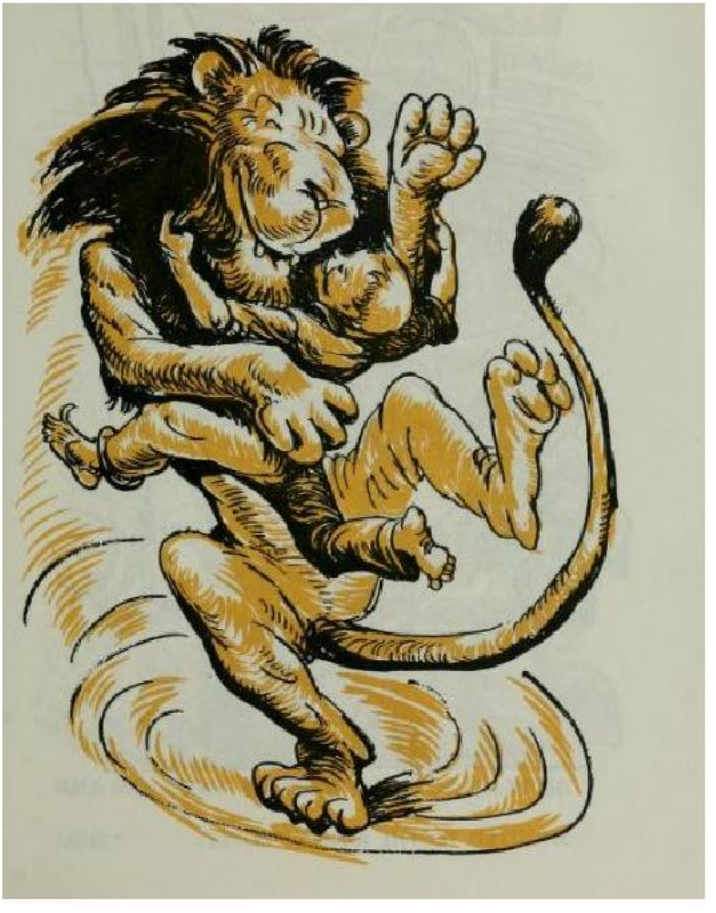

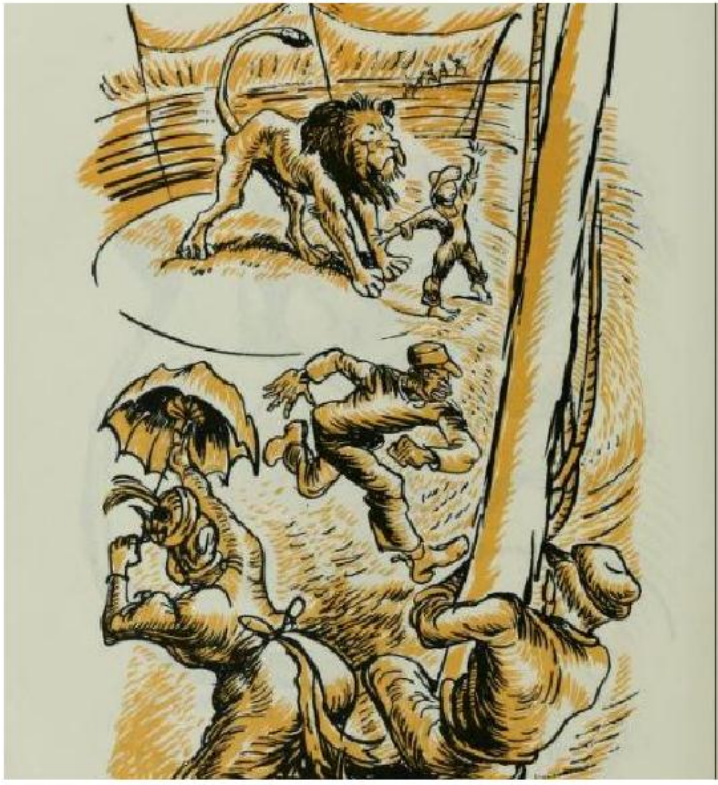

एंडी भीड़ के सामने खड़ा हुआ और
वो गुस्सा हुए लोगों पर चिल्लाया.

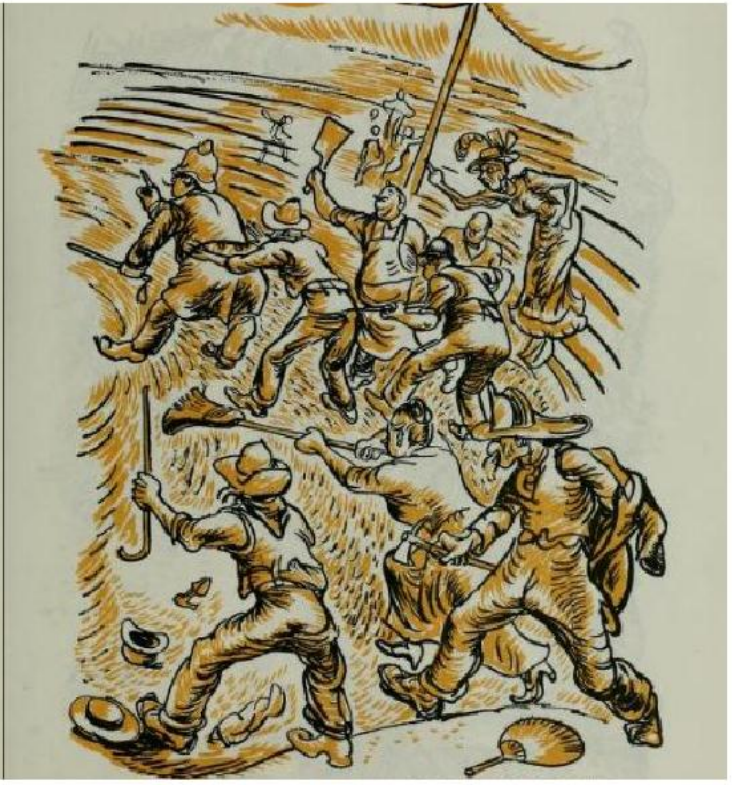

“उस शेर को कोई नुकसान नहीं
पहुँचाना. वो मेरा पुराना दोस्त है.”

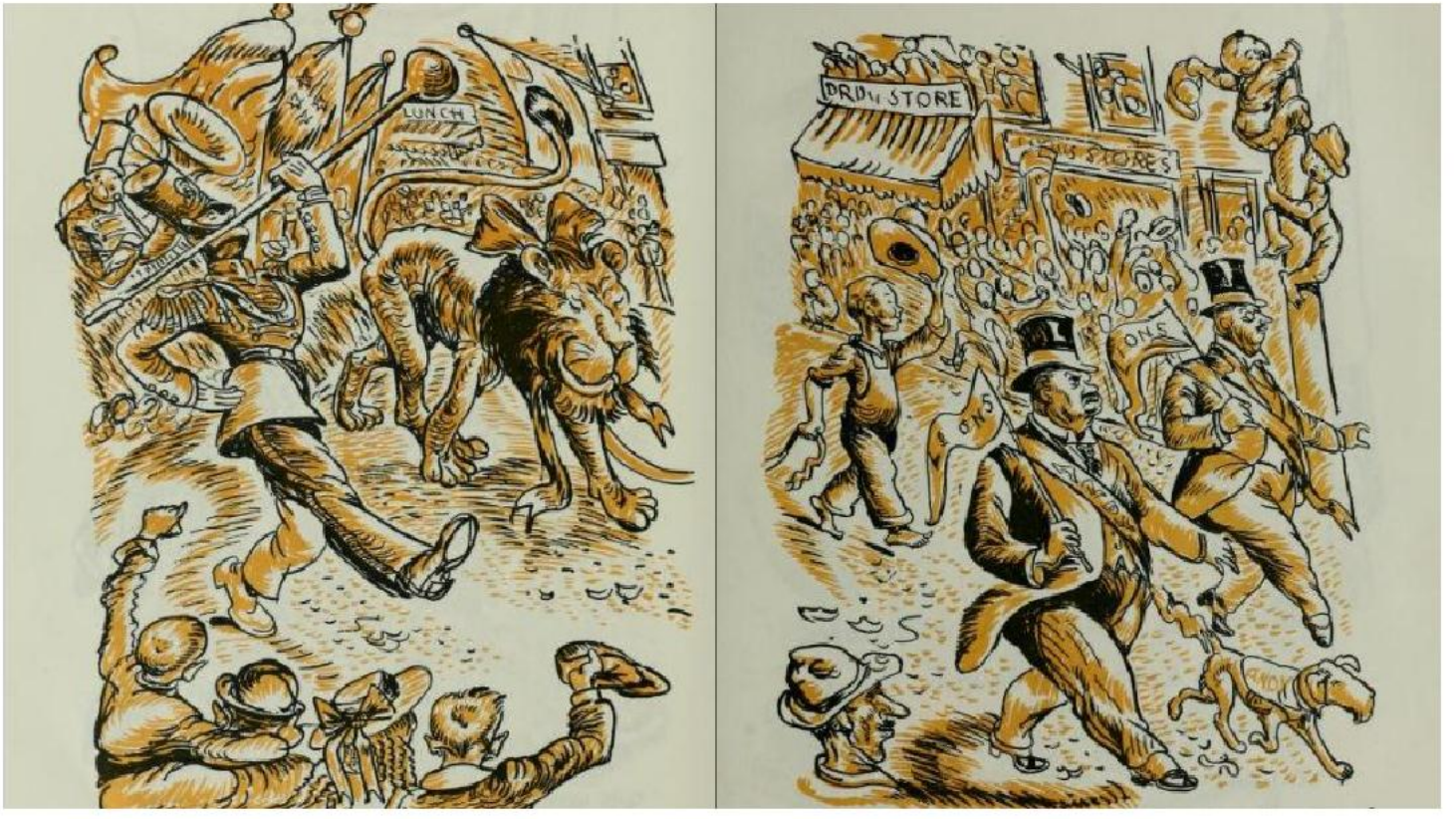

अगले दिन एंडी और लोगों ने शेर के साथ मिलकर मुख्य सड़क पर एक परेड निकाली.

जब वे सिटी हाल पहुंचे तो वहां मेयर ने एंडी को बहादुरी के लिए एक मेडल दिया. उससे शेर बहुत खुश हुआ.
फिर अगले दिन....

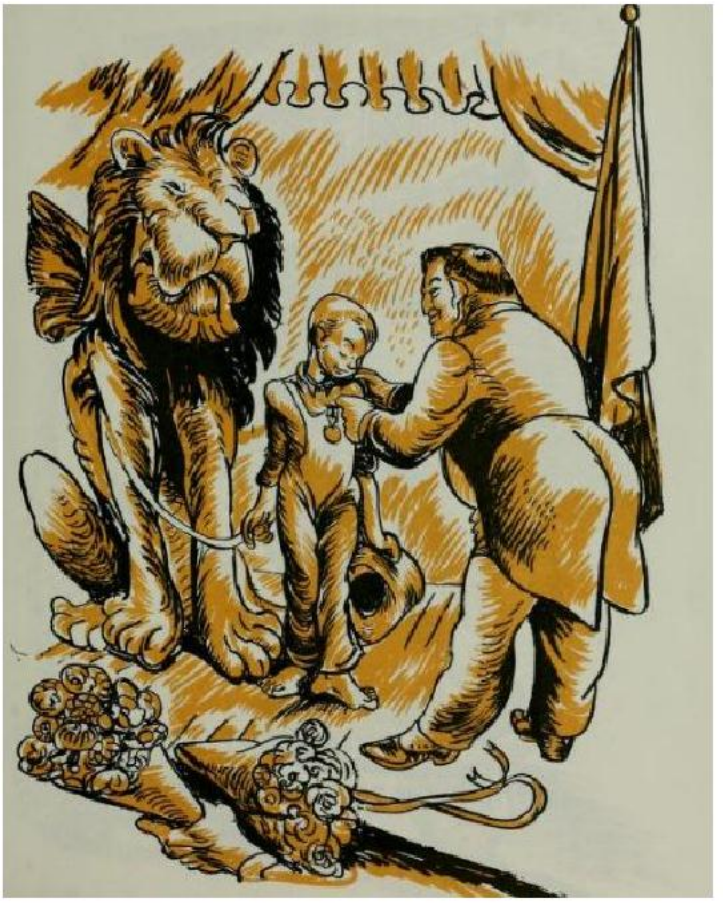

.....एंडी ने किताब लाइब्रेरी में वापिस कर दी.

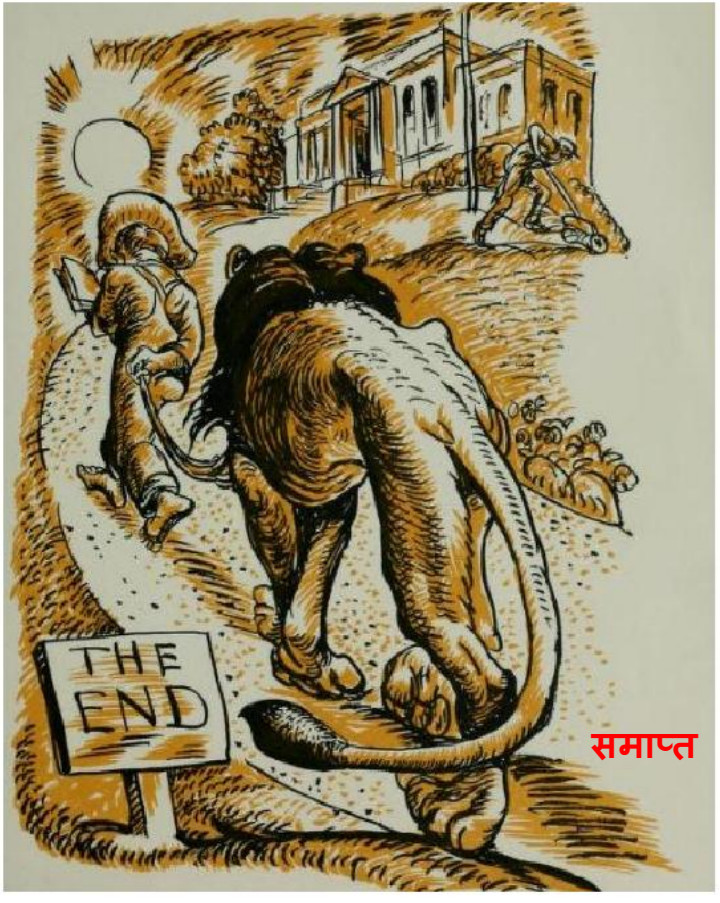

“इस पुस्तक के शब्द और चित्र हर उम्र के लोगों को पसंद आयेंगे – चाहें वे छह साल के हों या फिर साठ साल के. यह कहानी दरअसल बहुत छोटी है. शायद यही उसकी खूबसूरती भी है. कहानी में एक भी फ़िज़ूल का शब्द नहीं है. उससे पाठक को लगता है कि वो भी बहुत तेज़ी से किताब के हीरो के साथ-साथ आगे बढ़ रहा है.”

– द न्यू-यॉर्क टाइम्स